निष्कर्ष --

पंचम अध्याय के अंतर्गत शिवानी की कहानियों में चित्रित नारियों की विविध समस्याओं का अध्ययन करने के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष तक पहुँच गयी हूँ कि शिवानी ने विशेष कर नारी जीवन के विविध अंतरंग आयामों को उद्घाटित किया है। उन्होंने नारी जगत् के अन्तर्जगत के अज्ञेय तथा अज्ञात तथ्यों को उकेर कर उजागर किया है।

१) शिवानी की कहानियों में महानगरीय नारियों की तथा पहाडी नारियों की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। विविध स्तरों की नायिकाओं की विभिन्न समस्याओं को लेखिका ने उजागर किया है।

२) विवाह,तथा उससे संबंधित कई समस्याओं का मुकाबला भिन्न-भिन्न सामाजिक,सांस्कृतिक स्थितियों में जीनेवाली नारियों को करना पड़ता है। विधवा का पुनर्विवाह शिवानी की किसी भी कहानी में दिखाई नहीं देता।

३) दहेज प्रथा,अनमेल विवाह आदि के कारण विधवा बनी महिलाओं के चित्रण में शिवानी सफल हुई है। वह संकटों से हार नहीं मानती वरन अपनी योग्यता,अपरिमित धैर्य की बैसाखियों से अपराजिता बनती है। 'श्राप' कहानी में दहेज जैसी भयावह समस्या का ' दिव्या को जिंदा जलाने की घटना से यथार्थ चित्रण किया है।

४) दहेज प्रथा से बचने के लिए निर्धन लड़कियों का विवाह छोटी उम्र में दुहेजू, तिहेजू,बूढ़े व्यक्तियों के साथ शिकार बनी कई नारियों का चित्रण शिवानी के कहानियों में प्राप्त है।

५) अन्तर्जातीय,अन्तर्धर्मीय प्रेम-विवाह में असफल बनी नारियों के लिए समस्या का समाधान तात्कालिक है। वह कोई मार्ग प्रदान नहीं करता।

६) कहानियों में जो कामकाजी नारियाँ हैं - डाक्टर,प्राध्यापक,आदि वे सामान्यत: उच्चवर्ग की महिलाएँ हैं। अत: उन्हें २०वीसदी की कामकाजी नारियों की समस्याओं से अनभिज्ञ रखा गया है।

मध्यवर्गीय कामकाजी नारियां अधिकतर विधवाएँ हैं, जिन पर यह परिस्थिति पति निधन के कारण आयी है। ये नारियाँ अधिकतर अध्यापिका का पेशा स्वीकारती हैं। शिवानी की कहानियों में विधवा नारियाँ कामकाजी मध्यवर्गीय नारी के रूप में दिखाई देती हैं।

७) शिवानी की प्रौढ कुमारिकाओं पर आधारित जो कहानियाँ हैं, जैसे 'मन का प्रहरी' 'चिर स्वयंवरा', 'माणिक', 'मीलनी' आदि उनमें चित्रित समस्याएँ आज भी उतनी ही समस्यापूर्ण हैं। आज की नारी शिक्षिता होने के कारण इन नायिकाओं की तरह अविवाहित रहने का प्रण कर सकती है किन्तु कौमार्यावस्था में माँ नहीं बन सकती। शिवानी की 'मीलनी' कहानी में विलासिनी आर्थिक दृष्टि से सबल होने से सन्तान का पालन करती है, किन्तु उसे दूसरे की बेटी बता कर।

••

उपसंहार

उपसंहार

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध के लिए शिवानी कीकहानियोंका अनुसंधान की समीक्षा करने के बाद हम निश्चय ही इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हिन्दी कहानी साहित्य के क्षेत्र में शिवानी का योगदान सर्वथा मौलिक है। विशेषत: हिन्दी की महिला लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा, मन्नु भण्डारी, कृष्णा सोबती, शशिप्रभा शास्त्री आदि से शिवानी ने अपेक्षाकृत अधिक लोकप्रियता प्राप्त की है।

शिवानी को किसी वाद के घेरे में बाँधा नहीं जा सकता। शिवानी ने सजीव परिवेश के बीच जीवन को व्यापक धरातल और संस्कारों पर रूपायित किया है। इस परिवेश से वे स्वयं भी जुड़ी हुई हैं। उनकी कहानियों में भोगा हुआ यथार्थ है।

कहा जाता है कि नारी ही नारी के अन्तर्मन की अतल गहराइयों में पैठ सकती है। वह नारी यदि लेखिका है तो उसके साथ जुड़ी अगणित घटनाएँ, वह स्मृतियाँ उसकी अभिव्यक्ति में रोड़े अटकाती हैं। ऐसी परिस्थिति में एक स्त्री के लिए लेखन कार्य कठिन बन जाता है। शिवानी औचित्यविषयक लक्ष्मण रेखा के बाहर कभी नहीं आ पाती। सामाजिक मर्यादा के भीतर ही वे नारी के चरित्र को उजागर करती है।

शिवानी की कहानियों के बारे में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं — " शिवानी की कहानियों की दुनिया बहुत बड़ी नहीं है। अधिकतर पात्र उच्चतर तबके के होते हैं। संयोग और भाग्य उनमें पूरा योग देते हैं। इस दायरे में शिवानी जीवन्त प्राणियों को प्रत्यक्ष कर देती है। घरेलू समस्याएँ, जो मध्यम वर्ग के लोगों में विशेष आकार धारण करती जा रही हैं, उभर कर सामने आती हैं। भाषा में अद्भुत बानगी होती है। मेरा विश्वास है कि साहित्य में इन कहानियों का आदर होगा। "[१]

---

१ लाल हवेली - भूमिका में आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी -

सन् १९६५ में आ.हजारी प्रसाद द्विवेदी जी (की) ने शिवानी के प्रति अपने ये विचार व्यक्त किये थे। और द्विवेदी जी के इस कथन को शिवानी ने अच्छी तरह से साकार कर दिया है। १९६५ के बाद आजतक की साहित्यिक यात्रा में उन्हें सफलता ही मिलती चली है।

शिवानी की कहानियों का मुख्य प्रतिपाद्य पहाडी और नगर जीवन से जुडा हुआ नारी जीवन रहा है। नारी चित्रण में एक ओर शिक्षित नारी है, दूसरी ओर वेश्या जीवन का रुप है। शिवानी ने विशेषकर वेश्या जीवन को लेकर कुछ कहानियाँ लिखी हैं। नारी जीवन की समस्या के साथ साथ अवैध सन्तान की समस्या भी अभिन्न रुप से जुडी हुई है। अवैध सन्तान के संबंध कुमारिका माताओं का रुप भी चित्रित किया गया है। शिवानी की कहानियों में चित्रित इन कुमारी माताओं में आज की कुमारी माताओं की तरह इतना साहस नहीं है कि वह समाज से टक्कर लेकर अपनी सन्तान का पालन-पोषण करतीं। आज तो समाचार पत्रों के माध्यम से यह भी पढने को मिल रहा है कि आज सन्तान प्राप्ति के लिए भाड़े की माताएँ भी प्राप्त हो सकती हैं। न जाने क्यों शिवानी की दृष्टि इस ओर नहीं गयी। शिवानी की कहानियों में कुमारिका माताएँ समाज के डर से अवैध सन्तान का त्याग करती हैं, किन्तु भीलनी की विलासिनी जैसे आर्थिक दृष्टि से सबल कुमारिका अपनी ही सन्तान को दूसरे की बता कर अपने मातृत्व को अबाधित रखती है।

लेखिका ने अपनी कहानियों में वेश्या जीवन से संबंधित समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है। यहाँ उल्लेखनीय है कि शिवानी की कहानियों की अधिकतर वेश्याएँ अभिजात वर्गीय हैं, जैसे - 'धुआं' कहानी की मोतिया और रघुला 'शिबी' कहानी की शिवप्रिया। वेश्याओं भी नाचने-गानेवाली वेश्याएँ ('रथ्या' की बसती कैबरे डान्सर है तो 'बिन्दु' और 'कीर्तिस्तंभ' की तिलका विवाह-उत्सवों में और नैनादेवी के डोले के आगे नाचनेवाली), हीरावती और 'शिबी' शरीर बेचनेवाली हैं।

नारी के आधुनिक रुप भी शिवानी की कहानियों में देखने को मिलते हैं। नारी चित्रण में शिवानी ने पक्षपात नहीं किया है। उसके छलनामयी रुप को भी चित्रित करने में शिवानी का संस्कारशील नारी-चित्त विचलित नहीं हुआ,

यद्यपि यह अत्यंत कठोर कार्य है। नारी को नारी के तुलनात्मक रूप की परतें खोलने में ऐसा लगता है,जैसे वह स्वयं अपने आपको परत दर परत उघाड़कर अनावृत्त करती जा रही है। नारी का उन्मत्त रूप गृहस्थी को ठुकराकर पुराने प्रेमी के पास चली जानेवाली पत्नियों में दिखाया है जैसे 'चन्नी' कहानी की चन्नी, 'भिक्षुणी' की किकी। 'पुष्पहार' कहानी की दुर्गी विवाहिता होकर भी वेश्या के स्तर पर उतर आती है। तो कीर्तिस्तंभ कहानी की वेश्या 'तिलका' का अनन्य देशप्रेम अतुलनीय है।

इसके अलावा विवाह विषयक लगभग सभी समस्याओं का जैसे अनमेल विवाह, प्रेमविवाह,पुनर्विवाह,विधवा-विवाह,अवैध सम्बन्ध, अवैध सन्तान,भ्रूण हत्या,विवाह विच्छेद आदि समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास शिवानी ने अपनी कहानियों में किया है।

शिवानी की कहानियों में विधवाओं की स्थिति,उनका सौन्दर्य और उनकी अनगिनत समस्याओं का उल्लेख अनेक कहानियों में मिलता है, किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि शिवानी ने किसी भी विधवा का पुनर्विवाह नहीं कराया है। इसका कारण शायद यह है कि शिवानी कुमाऊं के जो संस्कार हैं उन्हें तोड़ना नहीं चाहती हैं। परन्तु उन्होंने संकेत से समस्या का हल बता दिया है।

शिवानी की कहानियों में माँ के रूप को भी प्रभावित ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इनकी कहानियों में माँ वात्सल्य,प्रेम और त्याग की सजीव प्रतिमा दिखाई देती है। उदाहरणार्थ 'ज्यूडिथ से जयन्ती' कहानी की विधवा माँ 'रमा दी' अनेक दु:ख झेलकर अपने पुत्र को उच्च शिक्षा देती है और बदले में पुत्र माँ को बिना बताये ही किसी मेम को बहू बना कर माँ के सपनों को पलभर में ही चकनाचूर कर देता है। बेचारी माँ को पिता के घर में,पति घर में फिर पुत्र के घर में भी सुख नहीं मिलता। परम्परागत भारतीय विधवा नारी की समस्याओं के चित्र 'रमा दी' के रूप में मिलते हैं। 'जोकर' कहानी की माँ तिलोत्तमादेवी और करिए छिमा की प्रेमी के प्रति त्यागमयी माँ हीरावती के चित्र भी अनूठे हैं।

सामाजिक समस्याओं में दहेज की ना समाप्त होनेवाली बीमारी आज भी जोंक की तरह समाज से चिपटी हुई है। शिवानी की अधिकांश कहानियों में माँ-बाप की अपनी बेटी का रिश्ता आई.ए.एस.अफसर से जोडने की महत्वाकांक्षा भी है उदाहरण स्वरुप अपराधी कौन कहानी है,तो दूसरी ओर आई.ए.एस. अफसर के माँ बाप भी अपने पुत्र का विवाह मन माँगा दहेज देनेवाली लडकियों के साथ किया करते थे जैसे - दो बहने का केशव। शिवानी की कहानियों का जो काल है (साठोत्तरी कहानियों का काल) उस काल में डॉक्टर, इंजिनियर की तुलना में आई.ए.एस.अफसरों की माँग ज्यादा थी,महत्व ज्यादा था।

दहेज के लालच के कारण अनेक प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं का प्यार ठुकराकर, उन्हें धोखा देकर अमीर लडकियों से विवाह रचाते दिखाये हैं,जैसे - गजदन्त कहानीका गिरीन्द्र, मास्टरनी कहानी का सुबोध, दो बहनें का केशव। श्राप कहानी में दहेज प्रथा के कारण बहू की हत्या की कथा है। आज भी समाज में शिक्षित युवकों को दहेज के लालच में कैसी भी लडकी से विवाह करने को तैयार हुए पाते हैं।

आज के परिवारों में सास-बहूओं का संघर्ष शहरों में कुछ कम सुनने को मिलता है,पर गाँव,देहात तथा पहाडों में जहाँ गरीबी,अशिक्षा,बीमारी आदि सिर उठाए खडी हैं,वहाँ सास बहू का संघर्ष दिखाई देता है। सास और बहू के संघर्षों में एक मनोवैज्ञानिक तथ्य यह है कि सास अपनी पसंद के विरुध्द पुत्र द्वारा लायी पुत्र-वधू को कभी क्षमा नहीं करती। चाहे वह सास पहाडी,अशिक्षित हो या सुसंस्कृत उच्चवर्ग की हो। सास-बहू के संबंधों में तनाव उत्पन्न करनेवाला यह कारण शिवानी की कहानियों में अधिक मात्रा में दिखाई देता है जैसे - नथ जा रे एकाकी, चाँचरी।

दांपत्य तथा पारिवारिक जीवन की समस्याओं को भी लेखिका ने उचित न्याय दिया है। एक विशेष बात यह है कि पतियों के लाम पर जाने के पश्चात, नवविवाहिता सास,ननद,देवर,जेठानी आदि के अत्याचारों से तंग आकर या तो घर छोडकर वैष्णवी बन जाती है या सहनशीलता की सीमा के समाप्त होने पर उनका प्रतिशोध लेकर खूनी,हत्यारिन बन जाती है।

समयुगीन समस्याओं का चित्रण करनेवाली शिवानी की कहानियों में टूटते हुए दांपत्य जीवन के पक्ष अर्थात नारी की मानसिकता का चित्रण अधिक है। इनके पात्र खास कर नायिकाएँ जिस तरह के अन्तर्द्वन्द्व से गुजरती हैं, वे अन्तर्द्वन्द्व आज भी लगभग ज्यों के त्यों बने हुए हैं। इससे भी आगे चलकर यह कहा जा सकता है कि ज्यों ज्यों नारी शिक्षित होती जा रही है, त्यों-त्यों उसके दांपत्य जीवन का विग्रह तीव्र से तीव्र तर होता जा रहा है।

शिवानी की कहानियों में एक विशेष बात यह है कि केवल पतियों ने ही पत्नियों का परित्याग नहीं किया है, बल्कि पत्नियों ने भी कुछ प्रसंगों में पतियों का परित्याग किया है। इनमें पढ़ी-लिखी, नगरों में रहनेवाली पत्नियों के साथ सामान्य शिक्षिता या अशिक्षिता देहाती पत्नियाँ भी हैं जैसे 'उपहार' की डॉक्टर नलिनी, 'मन के प्रहरी' की प्रा.अनुराधा पटेल, 'चांचरी' कथा की बिन्दी, आदि। 'बिन्दी' जैसी पत्नियाँ दिल से, हृदय से ही पति के प्रति विरक्त हो जाती है, तब कोई भी कानूनी सहायता नहीं लेती। उन्हें किसी भी चीज की अपेक्षा नहीं थी और इसके विपरीत जब जब पतियों ने निर्दोष पत्नियों का परित्याग किया है, तब तब वे जीवन के अन्त तक पश्चाताप की अग्नि में झुलसते रहे हैं। जैसे -- 'चांचरी' कथा का श्रीनाथ, 'उपहार' का रघुनाथ।

शिवानी की कहानियों में कुमाऊँ की सुकुमारता, बंगला की भावुकता, गुजरात की शालीनता, और लखनऊ की कुलीनता झलकती है। "उनकी गहरी अन्तर्दृष्टि सस्ती भावुकता से परे, परन्तु मार्मिक है। उनकी सहज किन्तु संदर्भ-गर्भित अभिव्यंजना थोड़े ही में सब कुछ कह जाती है।"[१]

शिवानी की भाषा शैली नारी स्वभाव की मनोवैज्ञानिकता को इस प्रकार व्यक्त करते हुए दिखाई देती है। "विमल साहबी रुचि का अफसर था ... आज तक तीन लड़कियों को उसने इसी सामान्य बात पर नापसन्द किया था। जब वह उन्हें देखने गया, तो आठ आठ सौ पानेवाले हर पिता की पुत्री के आँगन में कतार की कतार घर के धुले कपड़े झूल रहे थे। हर कतार में एक पेटीकोट

---

१ डॉ.सावित्री सिन्हा - शिवानी के चौदह फेरे - की प्रशंसा में --

और हर पेटीकोट में धोती की किनारी का फूहड नाडा । जिस घर की माँ या बेटी अपने पेटीकोट में कायदे का नाडा नहीं डाल सकती, वह क्या खाक मेमसाहब बनेगी" [१]

शिवानी की कहानियाँ अधिकांशत: नायिकाप्रधान है। वे सोद्देश्य भी हैं। कुछ कहानियाँ केवल मनोरंजनार्थ लिखी गयी है, जिनमें अद्भुत तथ्य को आधार है जैसे - कृष्णवेणी, तोमार जे दोंकिखन मुख, खुदा हाफिज, ठाकुर का बेटा आदि। नायकप्रधान कहानियों में मुख्यत: संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं, ऐसी कहानियों की रचना किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के हेतु नहीं की है।

शिवानी की विशिष्ट शैली उनकी अद्यतन कहानी 'चाँचरी' में भी परिलक्षित होती है, जैसे नायिका का अपरूप सुन्दरी होना साथ ही वह पहाड की भोली भाली, जन्म से तपस्विनी मातृहीना लडकी होना वह पति तथा ससुरालवालों का अन्याय का प्रतिकार नहीं करती बल्कि गहन साधना करके मौनव्रतधारी वैष्णवी 'सिद्धि' माँ बनती है, तीस वर्ष तक उसका पति पश्चाताप की अदृश्य लपटें में झुलसता रहता है फिर बिन्दी अन्त समय तक के आत्मिक क्लेश की सजा देकर हमेशा हमेशा के लिए उससे दूर चली जाती है। इसे शिवानी की प्रातिनिधिक कहानी मान सकते हैं।

शिवानी की कथायात्रा का मूल्यांकन स्वयं उन्हीं के शब्दों में कितना यथार्थ है - " मेरी कथायात्रा कितनी सफल रही, यह मूल्यांकन मेरे लिए क्या, किसी भी लेखक के लिए संभव नहीं है। यह मूल्यांकन कर सकता है केवल समय। किन्तु इतना अवश्य सिर उठाकर कह सकती हूँ कि जितना लिखा है, ईमानदारी से लिखा। यथार्थ को धकेल केवल कल्पना के मसिपात्र में लेखनी नहीं डुबाई। मेरी रचनाएँ कितनी लोकप्रिय हुई या मेरे कथा साहित्य ने इस वर्ष कितनी 'रायल्टी' बटोरी या मेरा कौन-सा उपन्यास फिल्म बनकर चमक सकता है, इन व्यर्थ की चिन्ताओं ने मुझे कभी नहीं विचलित किया। मुझे यद्यपि एक दो बार चित्र जगत् से आकर्षक प्रस्ताव भी प्राप्त हुए हैं तथापि जिस नायिका को मैंने रात-दिन एक बडे यत्न से गढा है, वह अचानक दिशा ज्ञान भूलकर किसी उज्जड नायक के साथ साथ किसी पेड की

---

१ कृष्णवेणी - प्रतीक्षा - पृ.५२।

परिक्रमा करने लगे, यह कल्पना ही मुझे व्याकुल कर देती है।" [१]

शिवानी की कहानियों में मनुष्य के चरित्र को मनोविज्ञान के शीशे से परखा गया है इसलिए उनके पात्र ऊपर से सहज सरल होते हुए भी अपने आंतरिक चरित्र से चौंका देने वाले और दिलचस्प हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि शिवानी अपने समय की एक ईमानदार, सफल और लोकप्रिय लेखिका है।

अक्तूबर १९९० के धर्मयुग के दीपावली अंक में प्रसिध्द हुई शिवानी की रचना इस बात की द्योतक है कि स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों में अग्रगण्य शिवानी की कलम अभी भी सशक्त है और उनकी आनेवाली रचना पहली रचना से अधिक सशक्त और बलवत्तर होती जा रही है।

शिवानी की विशिष्ट शैली के कारण 'चांचरी' को पढकर ऐसा लगता है, यह कहानी 'शिवानी' की ही हो सकती है। कथानक की उन्मुक्त सादगी और कौशल की पहाडी चित्रकला जैसी चटख रंगीनी अब भी शिवानी की सबसे बडी शक्ति है। इस कहानी में भी उन्होंने वातावरण बनाने और रुप चित्रण करने में अपनी कारीगरी सुरक्षित रखी है।

कुछ आलोचकों के मतानुसार यह दुहराव है और वे इसे लेखिका की सबसे बडी कमजोरी मानते हैं। मैं आलोचकों के मत के विरुध्द या पक्ष में कुछ नहीं कहूँगी, लेकिन उनसे इतना अवश्य पूछ सकते हैं कि लेखकों की भीड में से एक विशेष लेखक को अलग से किस तरह पहचानते हैं। वे शायद विशिष्ट शैली की बात कहें या इससे मिलती जुलती और कुछ बातें, लेकिन मुझे विश्वास है कि इस प्रश्न का उत्तर देते देते शिवानी पर लगाये गये अपने आरोपों का खण्डन वे अपने आप ही कर देंगे। संपूर्ण संस्कृत वाङ्मय में बाणभट्ट की कादम्बरी का छोटे-से छोटा अंश में अलग से पहचाना जा सकता है, वैसे ही जैसे हम हिन्दी गद्य लेखकों की भीड में भी श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी या उनके स्तर के शैलीकारों को अलग से पहचान लेते हैं। शिवानी के संबंध में भी यह बात नि:संकोच कही जा सकती है।

---

१ जालक - शिवानी - पृ.१३४।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

शिवानी ने अपने ऊपर लगाये गए आरोपों का खण्डन करते हुए अपने विचारों को निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया है।

" ओकले के अनुसार ' हिमालय के साहित्य की अपनी मौलिक विशेषता है। ' कूर्मांचल की रहस्यमयी पावन मसिधारा में लेखनी डुबोने का लोभ संवरण करना किसी भी कुमाउनी के लिए संभव नहीं है। " ऐसा ही शायद मेरे साथ भी हुआ है और इसीसे यदि मेरी कहानियों में, मेरे उपन्यासों में कुमायूं के प्रति मेरे मोह का स्वर रह-रह कर मुखर हो उठता है, तो मुझे आश्चर्य नहीं होता। किन्तु, मेरे आलोचकों की दृष्टि में मेरा यही सबसे बड़ा दोष है। क्यों मेरी प्रत्येक रचना कुमायूँ के ही सूर्योदय एवं सूर्यास्त तक सीमित रहती है ? क्यों मेरी प्रत्येक नायिका अपरूप सुन्दरी होती है ? ... मैं नहीं कह सकती कि मेरे पाठकों को भी यह दुहराव लगता है या नहीं ? ...[2]

" जब भी कहानी लिखने बैठती हूँ, स्मृतियों के जलप्रपात पर यत्न से धरी गरीयसी शिला कोई अदृश्य शक्ति उठाकर दूर पटक देती है, और वह तीव्र फुहार मेरे कागज पत्र, मेरी लेखनी और स्वयं मुझे आपादमस्तक सराबोर कर छोड जाती है। मेरी अधिकांश कहानियाँ और उपन्यासों के पात्रों की सृष्टि इसी पावन जलधार से अभिषिक्त हुई है। "[3]

लघु-शोध प्रबन्ध में हमने नारी की ज्वलंत समस्याओं से संबंधित कहानियों की चर्चा की। किन्तु अन्त में मन में सवाल यह उठता है कि साहित्यकार नारी के प्रति न्याय, सहानुभूति, सम्मान और आदर की भावनाएँ जागृत करने के लिए अपनी लेखनी की स्याही सुखा रहे हैं जब कि दैनिक-पत्रों की सुर्खियाँ नारी उत्पीडन और अत्याचारों से भरी हुई हैं। फिर भी हम डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल के शब्दों में यह आशा कर सकते हैं कि —' साहित्यकारों को अपना कर्तव्य निभाने दीजिए

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ की भूमिका में शिवानी - पृ.१० ।
२ - वही - ,, पृ.५ ।
३ - वही - ,, पृ.६ ।

क्योंकि रूढ़ियों में बंधे और परम्पराओं की चादर में सोये हुए समाज को जाग्रत करने के लिए यह भी जरूरी हैं किन्तु सर्वाधिक आवश्यक यह है कि इस व्यवस्था को समाप्त करने के लिए नारी समाज को सचेत किया जाए जिसकी पहली और अंतिम चोट नारी पर ही पड़ती है।" [१]

यद्यपि शोध प्रबन्ध अब समाप्ति पर आ गया है, तो भी मुझे ऐसा लगता है, इसमें और भी कुछ लिखा जा सकता है। मन में नये नये विचार, नयी नयी कल्पनाएँ आ रही हैं, परन्तु मर्यादाओं में बंधी होने के कारण इसको यहीं समाप्त करना ही होगा और आशा है भविष्य में मैं इस कार्य को आगे बढ़ाऊँगी।

---

१ अग्रवाल - गिरिराजशरण (डॉ.) : नारी उत्पीडन की कहानियाँ - पृ.